खण्ड (क)
मनोवैज्ञानिक-शोध (प्रश्न-III)
स्नातक (प्रतिष्ठा) खण्ड (2)
डॉ० रमेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कॉलेज, डुमराँव (बक्सर)

साक्षात्कार (Interview)

अनुसंधान के लिये सूचनाओं का संग्रह अथवा प्रदत्त-संकलन (Data Collection) करना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। इसके लिये कुछ उपकरणों का सहारा लिया जाता है। इन्हें शोध-यंत्र (Research tools) कहा जाता है। साक्षात्कार अथवा अन्तर्वीक्षा भी उन्हीं शोध उपकरणों में से एक प्रमुख उपकरण है। यह एक प्राचीन तथा लोकप्रिय शोध-उपकरण है। इसे परिभाषित करते हुए मैकोबी एवं मैकोबी ने कहा है:—

"Interview refers to a face to face verbal interchange, in which one person, the interviewer attempts to elicit information or expression of opinion or belief from another person or persons."

अर्थात साक्षात्कार से तात्पर्य एक ऐसी स्थिति से है जिसमें एक व्यक्ति यानि साक्षात्कारकर्ता आमने-सामने की मौखिक आदान-प्रदान द्वारा एक दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को सूचना देने के लिये तथा उसको अपना विचार या विश्वास को व्यक्त करने के लिये प्रेरित करने का प्रयास करता है।"

इसी अर्थ की एक अन्य परिभाषा प्रसिद्ध शोध-वैज्ञानिक करलिंगर (Karlinger) ने दी है, जो काफी स्पष्ट है:—

"साक्षात्कार आमने-सामने की एक अन्तर्वैयक्तिक

(अन्तःपरस्परिक) नाटकीय परिस्थिति होती है, जिसमें साक्षात्कार लेनेवाला शोधकर्ता, साक्षात्कार देनेवाले उत्तरदाता ~~शोधकर्ता~~ से ऐसे तैयार प्रश्न पूछते हैं, जिससे शोध समस्या के ~~लिये~~ लक्ष्यों की पूर्ति के लिये उपयुक्त उत्तर प्राप्त हो जाए।"

इसी तरह साक्षात्कार की एक संक्षिप्त परिभाषा John Best (1963) ने दी है:- "The interview is in a sense an oral type of Questionnaire" अर्थात एक तरह की मौखिक प्रश्नावली होती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं का गहन अध्ययन करने पर साक्षात्कार की कुछ विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं जिससे साक्षात्कार की ~~विशेष~~ स्वरूप को समझना आसान हो जाता है।

विशेषताएँ :-

(i) साक्षात्कार एक ऐसा सामाजिक प्रक्रम है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संबन्ध रहता है।

(ii) यह आमने-सामने की परिस्थिति अथवा संबन्ध होता है।

(iii) इसका उद्देश्य पहले से निश्चित होता है।

(iv) इस पारस्परिक आदान-प्रदान में Record अवश्य रहता है। प्रश्न का खाका पहले से तैयार रहता है।

(v) इन अभिलेखों (Records) के आधार पर सूचना संग्रह की जाती है।

साक्षात्कार के प्रकार :- शोध के स्वरूप, उद्देश्य, उत्तरदाताओं की संख्या आदि के आधार पर कई प्रकार-भेदों में बाँटा जाता है। वर्तमान में हम अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर दो श्रेणियों में विभक्त कर अध्ययन करेंगे। शोध-संरचना के आधार पर साक्षात्कार को दो प्रमुख भागों में विभक्त किया जाता है:—

(क) संचरित साक्षात्कार (Structured-Interview)

(ख) असंचरित साक्षात्कार (Unstructured-Interview)

(क) संचरित साक्षात्कार :- साक्षात्कार के इस प्रारूप को नियंत्रित साक्षात्कार, निर्धारित साक्षात्कार मानकीकृत साक्षात्कार आदि कई नामों से भी जाना जाता है। जैसा कि नामों से स्पष्ट है इस प्रकार की साक्षात्कार में साक्षात्कार का प्रारूप, प्रश्न, प्रश्न-संख्या, क्रम आदि का निर्धारण पहले से ही कर लिया जाता है। इतना ही नहीं प्रश्नों को पूछने में साक्षात्कारकर्ता को कितनी छूट रहेगी यह भी पहले से ही निर्धारित कर लिया जाता है। दूसरे शब्दों में साक्षात्कारकर्ता को निर्धारित मानक के विरुद्ध जाने की छूट नहीं होती है। साक्षात्कार के इस प्रारूप में साक्षात्कार-यंत्र के रूप में Interview-schedule (साक्षात्कार-अनुसूची) का व्यवहार अधिक किया जाता है जिसे शोध-समस्या को ध्यान में रखते हुए पहले से ही निर्धारित कर लिया जाता है। इसी अर्थ में इसे "मानकीकृत साक्षात्कार भी कहा जाता है। इसमें निर्धारित नियमों का कठोरता (Rigidity) पूर्वक पालन करना होता है।

(ख) असंचरित साक्षात्कार :- साक्षात्कार के इस प्रारूप को अनिर्धारित साक्षात्कार या, अमानकीकृत साक्षात्कार भी कहते हैं। साक्षात्कार के इस प्रारूप का अनुसंधान कार्य में बहुत ही कम प्रयोग होता है। हालाँकि असंचरित साक्षात्कार में भी प्रश्नों का कुछ संकलन रहता है, पर साक्षात्कारकर्ता को यह छूट रहती है कि अपने तत्क्षण निर्णय (Presence of mind) के आधार पर निर्णय लेगा। कौन प्रश्न कब पूछेगा, कैसे शब्दों का प्रयोग करेगा इसकी कोई निश्चितता पहले से निर्धारित नहीं रहती है। यह बहुत ही लचीला (open-end) और लचीला (flexible) होता है।

संचरित साक्षात्कार और असंचरित साक्षात्कार में अन्तर स्पष्ट करते हुये Maccoby & Maccoby ने कहा है:-

" The Standardized Interview stimulates the more purposeful questionnaire rather closely and incorporates a basic principle of measurements, and is more reliable whereas the Unstandardised interview is capable of deeper probing and is more flexible and life-like."

अर्थात संचरित अथवा प्रमाणिक साक्षात्कार किसी उद्देश्यपूर्ण प्रश्नावली का बहुत ही अधिक निकटतम अनुकरण होता है जिसमें मापन का मौलिक सिद्धान्त जुड़ा रहता है और यह अधिक विश्वसनीय होता है, इसके विपरीत असंचरित अथवा अप्रमाणिक साक्षात्कार गहन स्तर पर खोज के लिये उपयुक्त नहीं होता है।

साक्षात्कार के गुण :-

साक्षात्कार विधि एक प्राचीन और लोकप्रिय विधि है जिसका पहले उपयोग निदान अथवा उपचार के क्षेत्र में किया जाता था, परन्तु वर्तमान में अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण तकनीक अथवा उपकरण के रूप में स्थापित हो चुकी है। इसमें कई गुण पाये जाते हैं:-

① साक्षात्कार विधि का सबसे बड़ा गुण प्रत्यक्ष-अध्ययन याति आमने-सामने का आदान-प्रदान है। इसमें उत्तरदाता से सीधे प्रश्न पूछना संभव है। यदि उत्तरदाता को थोड़ा भी संशय होती है तो वह तत्क्षण स्पष्टीकरण कर लेता है। यह सुविधा शोध के दूसरे उपकरणों/यंत्रों में नहीं है।

② इस विधि की एक बड़ी खासीयत यह है कि इसके माध्यम से उत्तरदाताओं से सौहार्दपूर्ण-सम्बन्ध स्थापित करने में सफलता मिल जाती है। इसका फायदा यह होता है कि गोपनीय सूचनाएं भी

प्राप्त हो जाते हैं। ~~प्रश्नावली~~ उचित अनुसूचियों के माध्यम से यह संभव हो जाता है। यह किसी दूसरे उपकरणों के माध्यम से संभव नहीं है।

(3) किसी प्रमाणिक अनुसूची (Schedule) के साथ किया गया साक्षात्कार पर्याप्त मात्रा में सूचनाएँ उपलब्ध करा देती हैं। इससे समाज में व्याप्त विषम घटनाओं, यथा भ्रष्टाचार, बेकारी, गरीबी आदि के कारणों से संबन्धित सूचनाएँ इससे एकत्रित करना संभव है।

(4) इस उपकरण की अपनी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सुनम्यता या लचीलापन का गुण है। इसके माध्यम से अपनी सुविधानुसार अध्ययन प्रक्रम में बदलाव किया जा सकता है। विशिष्ट परिस्थिति के ~~अनु~~ में स्थिति के अनुसार समायोजन एवं परिवर्तन कर सकता है।

(5) साक्षात्कार एक उपयोगी उपकरण है। सूचना संग्रह में काफी उपयोगी है। जैसे बच्चों के स्तर पर शोध कार्य के लिए तथा चिकित्सात्मक शोध के लिये सबसे अधिक उपयोगी विधि साक्षात्कार विधि है।

(6) वस्तुनिष्ठ अध्ययन साक्षात्कार से संभव है। इस विधि से शोध के लिये प्राप्त सूचनाएँ तथा आंकड़ों का सत्यापन ~~संभव है~~। सरलतापूर्वक किया जा सकता है। इससे प्राप्त आंकड़े वस्तुनिष्ठ होते हैं क्योंकि नियंत्रित एवं मानकीकृत स्थितियों में अध्ययन सम्पन्न किया जा सकता है।

(7) इस विधि से शोध के लिये प्राप्त सूचनाएँ अधिक विश्वसनीय और वैध (Reliable & valid) होते हैं। यह इस विधि की खास विशेषता है।

(8) शोध के लिये ऐसा उपकरण है जिसके माध्यम से कम पढ़े-लिखे या भाषा की कम क्षमता रखनेवाले लोगों से भी सूचना संग्रह किया जा सकता है। अन्य उपकरणों की तुलना में सरल और विस्तृत अध्ययन संभव है।

(9) साक्षात्कार सूचना संग्रह की एक ऐसी यंत्र है, जिसे शोध में व्यवहृत अन्य किसी भी उपकरण के साथ पूरक यंत्र के रूप में उपयोग में भी लाया जा सकता है। इसे पूरक यंत्र के रूप में सम्मिलित रूप से उपयोग में लाकर अधिक से अधिक सूचनाएँ संग्रहित किया जा सकता है।

(10) इस विधि की एक बड़ी विशेषता है कि इससे शोध के लिये प्राप्त सूचनाओं का Coding एवं सांख्यिकीय निरूपण (Statistical interpretation) में आसानी होती है। शोध के लिये सूचना संग्रह में समस्या से सम्बन्धित प्रत्येक पक्ष से वस्तुनिष्ठ ढंग से सूचना संग्रह की जाती है।

सीमाएँ :- उपर्युक्त गुणों के बावजूद साक्षात्कार विधि की अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं :-

(1) शोध कार्य के लिये प्रयुक्त साक्षात्कार विधि पर सबसे बड़ा दोष यह लगाया जाता है कि इसमें बहुत सी ऐसी जटिल, वैयक्तिक तथा विवादास्पद प्रसंग रहते हैं जिस पर उत्तरदाता साक्षात्कार के समय प्रत्यक्ष रूप से उत्तर देने में कतराते हैं। अथवा अचेतन प्रेरकों के प्रभाव से मानसिक अवरोधन का अनुभव करते हैं। जैसे - आय सम्बन्धित सूचनाएँ, धार्मिक विश्वास संबन्धित सूचनाएँ, मनोवृत्ति से सम्बन्धित सूचनाएँ आदि।

(2) साक्षात्कार विधि में उत्तरदाता की भूमिका प्रायः निष्क्रिय रहती है जिससे उसके द्वारा दी गई अधिकांश उत्तरों में बनावटीपन या कृत्रिमता का दोष आ जाता है। इससे गहन अध्ययन न होकर अपनी स्तर के ऊपर प्राप्त होते हैं।

(3) इसमें साक्षात्कारकर्ता का व्यक्तित्व भी उत्तरदाता को प्रभावित करने लगता है जिससे प्रभावित होकर वह दबाव में आ जाता है। उत्तरदाता को झीझक सी लगती है जिससे स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाते हैं। अक्सर शोधकर्ता और उत्तरदाता का लिंग भी दुराव है। ऐसी अवस्था में उत्तर दोषपूर्ण हो जाते हैं।

(4) HERBERT HYMAN के अनुसार अन्तर्वीक्षा के समय किसी विशिष्ठ विषय के संबन्ध में उत्तरदाता का अपना पूर्वाग्रह भी यथार्थ उत्तर प्राप्त करने में बाधक होता है। इससे निष्पक्ष उत्तर प्राप्त होने की संभावना कम हो जाता है। एक विशेष प्रकार की उत्तर पाने की प्रत्याशा लेकर अध्ययनकर्ता आता है। इससे अन्तर्वीक्षा की सफलता संदेह के घेरे में आजाती है।

(5) संचरित साक्षात्कार में प्राय: विषय चुने हुए रहते हैं। इस प्रकार उत्तरों में नियंत्रण की एक सीमा (दायरा) रहता है जिससे विश्वसनीय उत्तरों का आना संदिग्ध हो जाता है। उत्तरदाता पूर्णत: स्वतंत्र होकर उत्तर नहीं दे पाता है। उत्तरों की सीमा निर्धारित रहती है।

(6) साक्षात्कार की एक बड़ी सीमा (Limitation) वैज्ञानिकता का अभाव होना है। साक्षात्कार में अभी तक निश्चित सिद्धान्त का अभाव है जिससे अभी तक पूर्ण वैज्ञानिक रूप देने वाली अभी तक कोई प्रक्रिया नहीं बन पाई है। अत: साक्षात्कार एक कला के रूप में ही रह गया है जिसकी सफलता साक्षात्कारकर्ता के वैयक्तिक अनुभव एवं निपुणता पर निर्भर करता है।

उपर्युक्त गुण एवं दोषों के मूल्यांकन के आधार पर कहा जा सकता है कि सूचना संग्रह के लिये शोधशास्त्र की एक प्रमुख विधि अथवा यंत्र है। जिसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। इसके दोषों को दूर करने के लिये सावधानी से बनाई गई अनुसूचियों के साथ Projective technique को पूरक के रूप में संयुक्त इस्तेमाल श्रेयस्कर रहेगा।

E. Content Study material
for B.U.M. (B.A. Part-(2)
Psychology (Hons)
Paper III
By - Dr. Ramendra Kr. Singh.
H.O.D. Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar)